आंखों को नया जीवन

आलेख: गिरिराज अग्रवाल
फोटो: डेनियल विल्किंसन

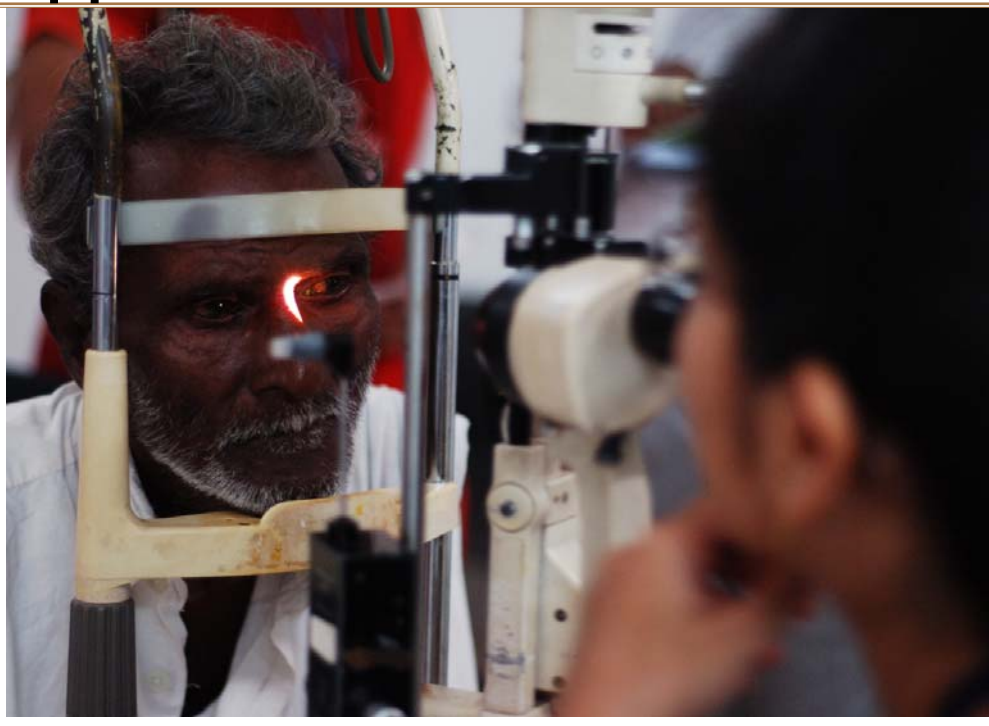

आंखों की जांच से क्या यह पता लग सकता है कि कोई व्यक्ति एड्स से पीड़ित है या नहीं? या फिर आंखों की जांच कर क्या डॉक्टर यह बता सकते हैं कि आप गठिया या उच्च रक्तचाप के शिकार हैं या नहीं? चेन्नई के शंकर नेत्रालय अस्पताल के नेत्र विशेषज्ञों के अनुसार इन दोनों ही सवालों के जवाब हां में हैं क्योंकि ज्यादातर बीमारियों का असर आंखों के टिश्यू पर पड़ता है। यहां ऐसी जांच हो भी रही हैं। इन विशेषज्ञों का कहना है कि आंखों की पूरी तरह जांच से उन बहुत सी बीमारियों के बारे में पता लग सकता है जो शरीर में घर बनाए हुए हैं। शंकर नेत्रालय के शोधकर्मी और डॉक्टर सिर्फ नेत्र रोगों का इलाज तलाशने या फिर नई सर्जरी तकनीक विकसित करने पर ही ध्यान नहीं देते बल्कि आंखों में उन लक्षणों की पड़ताल पर भी काम करते हैं जो अन्य बीमारियों का संकेत हो सकती हैं।

शंकर नेत्रालय की यात्रा लगभग 28 साल पहले शुरू हुई। उस समय युवा डॉक्टर रहे डॉ. एस.एस. बद्रीनाथ ने आंखों के ऐसे अस्पताल का सपना देखा जिसमें इलाज के लिए दुनिया के नवीनतम उपकरण और तकनीकें मौजूद हों और अमीर-गरीब सभी की आंखों की बीमारियों का उच्च कोटि का इलाज हो सके। आज शंकर नेत्रालय नेत्र चिकित्सा के लिए पूरे भारत में जाना जाता है। डॉ. बद्रीनाथ के अनुसार, ''शंकर नेत्रालय में हर दिन लगभग 1500 मरीज आते हैं और अस्पताल के 22 ऑपरेशन थियेटरों में सौ से ज्यादा मरीजों की सर्जरी की जाती है।'' वह बताते हैं कि अस्पताल को न लाभ न हानि के आधार पर चलाया जाता है और एक-तिहाई मरीजों का इलाज नि:शुल्क होता है। शंकर नेत्रालय का दर्शन समझाते हुए वह कहते हैं- जो इलाज का खर्च दे सकते हैं, उनसे पैसा लिया जाता है और गरीबों को सब्सिडी दी जाती है। डॉ. बद्रीनाथ के अनुसार शंकर नेत्रालय में आंखों की बीमारियों के इलाज के लिए हर नवीनतम उपकरण और तकनीक का प्रबंध है और समय-समय पर आवश्यकता के अनुसार नए उपकरण लाए जाते हैं। मार्च 2006 में अस्पताल ने 43 लाख रुपये की लागत से रेटिना को स्कैन करने वाली मशीन खरीदी। इस मशीन के जरिये रेटिना की छोटी से छोटी बीमारी की पहचान करना संभव हो गया है। उनके अनुसार शंकर नेत्रालय ने रोगियों को हमेशा नवीनतम चिकित्सा सुविधा मुहैया कराई है- फोटो रिफ्रेक्टिव सर्जरी और लैसिक लेजर ऐसे कुछ उदाहरण हैं।

ऊपर बाएं: गरीब वृद्ध अन्ना की आंखों की शंकर नेत्रालय में नवीनतम तकनीक से जांच।

ऊपर दाएं: गरीब महिलाओं को आंखों के ऑपरेशन के बाद शंकर नेत्रालय द्वारा नि:शुल्क बिस्तर भी उपलब्ध कराया जाता है।

चैरिटेबल अस्पताल होने के कारण इस अस्पताल को गरीब मरीजों का नि:शुल्क इलाज जारी रखने और अपने कामकाज को विस्तार देने के लिए लोगों से वित्तीय मदद की जरूरत होती है। अस्पताल की आर्थिक मदद के लिए चार्टर्ड एकाउंटेंट एस. वी. आचार्य और कुछ अन्य भारतीय अमेरिकियों ने 1988 में रॉकविल्ले, मैरीलैंड में बाकायदा एक गैरलाभकारी संगठन शंकर नेत्रालय ओम ट्रस्ट बनाया। इस संगठन को दिए गए दान पर कर देने से भी छूट मिली हुई है।

फोटो: ए. मोहन/ साभार शंकर नेत्रालय

अमेरिका में रहने वाले एस. वी. आचार्य (बाएं) ने नेत्रालय के लिए धन जुटाने में अहम भूमिका अदा की। उन्हें नेत्रालय के एक समारोह में चेन्नई में अमेरिकी कांसुल जनरल डेविड हॉपर ने शंकर रत्न पुरस्कार दिया।

रोजमर्रा की आंखों की बीमारियों के इलाज के तौरतरीके तलाशने के साथ ही यहां के शोधकर्मी और डॉक्टर अब अपना ध्यान शोध पर केंद्रित कर रहे हैं। अस्पताल 36 करोड़ रुपये की लागत से नया शोध संस्थान बना रहा है जहां पर स्टेम सेल और नैनो-तकनीक पर भी शोध कार्य होगा।

इस संगठन ने समय-समय पर शंकर नेत्रालय के लिए धन जुटाने में मदद की है। इस संगठन के संस्थापक न्यासी और मानद कोषाध्यक्ष आचार्य को चेन्नई में अमेरिका के कांसुल जनरल डेविड हॉपर ने शंकर नेत्रालय के शंकर रत्न पुरस्कार से सम्मानित किया। शंकर नेत्रालय ओम ट्रस्ट के अनुसार आचार्य ने शंकर नेत्रालय के लिए अमेरिका में लगभग नौ करोड़ रुपये जुटाए। आचार्य अब अमेरिकी नागरिक हैं और मान्यता प्राप्त लेखाकार के रुप में संघीय सरकार के साथ काम कर रहे हैं।

शंकर नेत्रालय त्रिसूत्री फॉर्मूले पर चल रहा है। रोजमर्रा की क्लिनिकल सेवाएं देने के अलावा यह शिक्षा, प्रशिक्षण और शोध के काम में जुटा है। डॉ. बद्रीनाथ के अनुसार भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद ने इस अस्पताल को स्थापना के पहले ही साल में चिकित्सा विज्ञान के लिए शोध केंद्र के रूप मे मान्यता दे दी थी। लेकिन अब शंकर नेत्रालय के विशेषज्ञ नवीनतम प्रौद्योगिकियों पर काम कर रहे हैं। अस्पताल नेशनल इंस्टीट्यूट फॉर रिसर्च इन विजुएल साइंसेज एंड ऑफ्थामोलॉजी की स्थापना कर रहा है अगस्त में इसकी औपचारिक शुरुआत हो चुकी है और इस पर 36 करोड़ रुपये खर्च होने का अनुमान है। अस्पताल से संबंद्ध विजन रिसर्च फाउंडेशन के वाइस-प्रेसिडेंट और शोध निदेशक डॉ. एच. एन. माधवन के अनुसार, ''यह नया इंस्टीट्यूट शंकर नेत्रालय में चलने वाले सारे शोध कार्यों की जिम्मेदारी लेगा।'' वह बताते हैं कि भारत में नेत्र रोगों के बारे में प्रकाशित होने वाले सारे शोध पत्रों मे से एक-तिहाई शंकर नेत्रालय से होते हैं।

शंकर नेत्रालय के डॉक्टरों को स्टेम सेल से इस तरह से कॉर्निया विकसित करने में सफलता मिली है कि उसे शरीर अस्वीकार न करे। डॉ. माधवन के अनुसार इस तरह का कॉर्निया खरगोश की खराब आंख में प्रत्यारोपित किया गया है और अब अगले चरण के परीक्षण किए जाने हैं। वह बताते हैं कि 2007 के आखिर में शुरू होने वाले नए शोध संस्थान में स्टेम सेल शोध प्रयोगशाला भी स्थापित की जाएगी। शंकर नेत्रालय के शोधकर्मी डॉक्टर नैनो-प्रौद्योगिकी पर भी काम कर रहे हैं। डॉ. माधवन बताते हैं, ''नैनो-तकनीक के जरिये हमें इस तरह की तैयार मशीनें मिल सकती हैं जिनमें हमारे सिर के बाल से 50,000 हजार गुना छोटे कणों का इस्तेमाल हो और जो हमारी आंखों की रोशनी बचाने में बेहद मददगार साबित हों।'' नए शोध संस्थान में नैनो-तकनीक प्रयोगशाला भी स्थापित करने की योजना है। शंकर नेत्रालय ने आंखों के किसी भी प्रकार के संक्रमण की जांच के लिए रैपिड मोलिक्यूलर टेस्ट विकसित किया है। पारंपरिक जांच के तरीके संक्रमण के बारे में बताने में कई दिन ले लेते थे लेकिन नया तरीका मात्र 8 से 12 घंटे में इस बारे में बता देगा। अस्पताल में वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद के सहयोग से डीएनए चिप पर भी काम हो रहा है जो आंखों के संक्रमण से जुड़े किसी भी विषाणु या परजीवी की पहचान कर लेगा।

शंकर नेत्रालय के बहुत से डॉक्टर समय-समय पर अमेरिका में उच्च शिक्षा या शोध परियोजनाओं पर काम करने के लिए गए हैं। नैनो-तकनीक पर काम कर रहे डॉ. कृष्ण कुमार रिसर्च फेलोशिप के लिए अप्रैल 2000 से दिसंबर 2000 तक छह महीने तक अमेरिका की यूनिवर्सिटी ऑफ सदर्न कैलिफोर्निया में रहे। संस्थान की एक और डॉक्टर माइक्रोबायोलोजी विभाग की डॉ. के. लिली को एल्कान फोर्ट वर्थ टेक्सस, की फेलोशिप मिली और उन्हें वहां नेत्र रोग शोध में योगदान के लिए प्रतीक चिह्न भेंट किया गया। संस्थान के डॉक्टर सुधीर ने जुलाई 2004 से जून 2005 के बीच अमेरिका के जॉन हॉपकिन्स अस्पताल, विल्मर आई इंस्टीट्यूट में नेत्ररोग रोकथाम में प्रशिक्षण हासिल किया।

शंकर नेत्रालय अमेरिका के संस्थानों से भी नाता कायम करने में अग्रणी रहा है। भारत-अमेरिका भागीदारी के तहत फरवरी 2005 में शंकर नेत्रालय में भारत और अमेरिका के शोधकर्मियों की बैठक हुई। अमेरिका के नेशनल आई इंस्टीट्यूट ने कई साझा परियोजनाओं के लिए धन मुहैया कराया। संस्थान ने 1985 में एलीट स्कूल ऑफ ओप्टोमिट्री की शुरुआत की। इसका चार वर्षीय पाठ्यक्रम यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया बर्कली, बर्कली के बैचलर ऑफ ओप्टोमिट्री पाठ्यक्रम की तर्ज पर तैयार किया गया है। यहां से ओप्टोमिट्री की पढ़ाई के बाद कई छात्र पीएच.डी करने के लिए अमेरिका गए हैं।

शंकर नेत्रालय शोध के साथ ही अपने विस्तार के भी प्रयास में है। चार साल पहले शंकर नेत्रालय ने बेंगलूर में अपनी शाखा शुरू की। इसके अलावा जालना, महाराष्ट्र के गणपति नेत्रालय और गुवाहाटी के शंकरदेव नेत्रालय को भी संस्थान ने अपनी विशेषज्ञता का लाभ दिया है। डॉ. बद्रीनाथ के अनुसार देहरादून और मारीशस में नए केंद्र खोलने की तैयारी हो रही है।

शंकर नेत्रालय के मुखिया डॉ. बद्रीनाथ के अनुसार इस अस्पताल का अमेरिका से करीबी नाता है। यहां के बहुत से डॉक्टर समय-समय पर उच्च शिक्षा और शोध परियोजनाओं पर काम करने के लिए अमेरिका गए हैं।